2021

(Held in 2022)

HINDI

(Modern Indian Language)

Paper : HIN-CC-3016

(हिन्दी काव्यधारा)

Full Marks : 80

Time : 3 hours

The figures in the margin indicate full marks for the questions

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पूर्ण वाक्य में दीजिए : 1×10=10

(क) कबीर किनके शिष्य थे?

(ख) शंकरदेव के बरगीतों की भाषा क्या है?

(ग) सूरदास की श्रेष्ठ कृति क्या है?

(घ) मीराँबाई किनकी उपासिका थीं?

(ङ) 'रामचरितमानस' किनकी रचना है?

(च) 'अशोक की चिंता' कविता के कवि कौन हैं?

(छ) 'साकेत' महाकाव्य किनके द्वारा रचित है?

(ज) किनको हिन्दी का वड्र्सवर्थ कहा जाता है?

(झ) नागार्जुन का पूरा नाम क्या है?

(ञ) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जन्म कहाँ हुआ था?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के अत्यंत संक्षेप में उत्तर दीजिए : 2×5=10

(क) कबीर ने गुरु और गोविन्द के बारे में क्या कहा है?

(ख) "पायो जी मैं तो रामरतन धन पायो" —यहाँ कैसे 'रामरतन धन' की बात कही गयी है?

(ग) 'भ्रमरगीत' किसे कहते हैं?

(घ) 'पुष्प की अभिलाषा' कविता में पुष्प की कौन-सी अभिलाषा के बारे में बात की गयी है?

(ङ) 'प्रज्वलित वह्नि' का आशय क्या है?

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर दीजिए : 5×4=20

(क) 'गोकुल लीला' के आधार पर बाल-कृष्ण का सौन्दर्य वर्णन कीजिए।

(ख) तुलसीदास की 'दोहावली' के आधार पर उनकी भक्ति-भावना का परिचय दीजिए।

(ग) 'चित्रकूट में सीता' कविता का प्रतिपाद्य लिखिए।

(घ) 'पतझर' कविता के आधार पर कवि की प्रगतिवादी दृष्टि को स्पष्ट कीजिए।

(ङ) "बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ" —का आशय स्पष्ट कीजिए।

(च) 'आत्म-परिचय' कविता का भावार्थ लिखिए।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के सम्यक् उत्तर दीजिए : 10×2=20

(क) शंकरदेव अपने आराध्य से क्या निवेदन कर रहे हैं? स्पष्ट कीजिए।

(ख) 'तोड़ती पत्थर' कविता का सारांश प्रस्तुत कीजिए।

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10×2=20

(क) मैया, कबहिं बढ़ैगी चोटी?
किती बार मोहिं दूध पियत भई, यह अजहूँ है छोटी।
तू जो कहति बल की बेनी ज्यौं, ह्वै है लाँबी-मोटी।
काढ़त-गुहत न्हवावत जैहै नागिनी-सी भुइँ लोटी।

अथवा

अथिर धन जन जीवन यौवन
अथिर एहु संसार।
पुत्र परिवार सबहि असार
करबो काहेरि सार॥

(ख) मुझे तोड़ लेना वनमाली!
उस पथ पर देना तुम फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पंथ जावें वीर अनेक।

अथवा

नयन में जिसके जलद वह तृषित चातक हूँ,
शलभ जिसके प्राण में वह निठुर दीपक हूँ,
फूल को उर में छिपाये विकल बुलबुल हूँ
एक होकर दूर तन से छाँह वह घन हूँ,
दूर तुमसे हूँ अखंड सुहागिनी भी हूँ।

★★★